

Q17. Write the nature of guidance.
Unit about Educational, Vocational and Personal Guidance.

निर्देशन का अर्थ क्या है? शैक्षिक, वocational तथा व्यक्तिगत निर्देशन के अर्थ क्या हैं?

Q18. Explain the nature of guidance and suggest different types of guidance.

निर्देशन की प्रकृति क्या है? इसके अनेक प्रकार हैं। इनमें से कुछ प्रमुख प्रकार बताइए।

निर्देशन का अर्थ क्या है?

(Meaning and nature of guidance)

"जीवन समाजों की एक लचीली श्रृंखला है। इस श्रृंखला में बड़ी संख्या में लोग शामिल हैं। वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि समाजों को गहराई में 'इंसान' बना लेता रहता है। यह एक कठोर सत्य है कि इंसान समाजों के मजबूत पंजों से निकल नहीं सकता। इस वह सुखद जीवन बिताना चाहता है तो उसे समाजों के बीच ही कोई मार्ग निकालना होगा। जो व्यक्ति कोंटों से होकर गुजरने की कला जानता है वह समाजों के साथ समझौता कर अपने-आपको आसानी से समझौता कर लेता है और जीने की राह निकाल लेता है।

वे व्यक्ति जो व्यक्ति समाजों से दूर रहना तथा अलग होकर स्थापित करना नहीं जानता है वह अपने तथा समाज दोनों के लिए हानिप्रद सिद्ध होता है। ऐसे व्यक्ति को एक सलाहकार (Counselor) की आवश्यकता होती है जो उसे अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, भावनाओं एवं साधनों तथा बाह्य परिस्थितियों के बीच समझौता कर आसानी से स्थापित करने में मार्गदर्शन कर सके। मार्गदर्शन की इसी क्रिया को निर्देशन (Guidance) कहते हैं। आसानी से समझौता (Adjustment Problem) का समाधान दो तरह से होता है। कभी तो व्यक्ति बाह्य परिस्थिति में परिवर्तन या परिणाम लाकर उसे अपने अनुकूल बना लेता है और कभी अपने-आप में परिवर्तन लाकर परिस्थिति के अनुकूल बन जाता है। इस प्रकार निर्देशन व्यक्ति को अपने गुणों तथा आवश्यकताओं को समझने और उनके अनुसार आसानी से समझौता करने में मदद करता है।

पारिधीय स्वापुमंडल कहते हैं।
पारिधीय स्वापुमंडल वस्तुतः स्वापुमार्ग (receptor) को घेरता है, जिसे द्वारा कर्नेलिया (receptor) के संदेश मस्तिष्क एवं सुपुन्ना को प्राप्त होते हैं तथा मस्तिष्क एवं सुपुन्ना के संदेश मांसपेशियों आ ग्रंथियों, आर्गन आदि वापस वापसी वंतुओं (efferent fibers) एवं जातिवादी वंतुओं (afferent fibers) द्वारा होता है। जागवादी वंतु कर्नेलिया से प्रारंभ होकर केंद्रीय स्वापुमंडल की ओर जाते हैं जबकि जातिवादी वंतु केंद्रीय स्वापुमंडल से निकलकर कर्नेलिया (receptor) व मांसपेशी वंतुओं (efferent fibers) की ओर जाते हैं। इस प्रकार एक दोनो प्रकार के स्वापुमंडल (afferent fibers) द्वारा आहवेन्द्रियों (receptor) एवं कर्नेलिया (efferent fibers) का संबंध केंद्रीय स्वापुमंडल (central nervous system) के साथ तथा केंद्रीय स्वापुमंडल का संबंध आहवेन्द्रियों एवं कर्नेलियों से स्थापित होता है। अतः पारिधीय स्वापुमंडल की निम्नलिखित मुख्य अवयव हैं -

- क) आहवेन्द्रियों (receptor organs)
- ख) जागवादी स्वापुमंडल (afferent sensory neurites)
- ग) कर्नेलिया (efferent or motor neurites) एवं

मध्य स्नायु मंडल (CNS) :-

केंद्रीय स्नायु मंडल (CNS) प्रमुख रूप से मध्य स्नायु मंडल (PNS) से प्राप्त स्नायु प्रवाहों का (integration) केंद्र है। जहाँ परस्पर स्नायु मंडल का कार्य नियंत्रण हो सकेगा उसे स्नायु प्रवाहों के प्रवाह होता है वहीं केंद्रीय स्नायु मंडल (CNS) का कार्य है स्नायु प्रवाहों का प्रकीर्णन करना है। अर्थात् विभाजित है -

शुष्क (spinal cord) एवं

तंत्र (brain)

(spinal cord) शुष्क तंत्र स्नायु (relaxation) की है उत्तर में भाग लेता है नीचे से पीठ की ओर तक में रहता है शरीर का जोड़े स्नायु में निहित शरीर में फैला रहता है। प्रत्येक शरीर में एक-एक स्नायु शरीर के बीच भी उत्तर से उत्तर प्रवाह करती है और शरीर का स्नायु है। फिर एक शरीर स्नायु (spinal cord) स्नायु प्रवाह-प्रवाह के उत्तर की ओर से निकलती है जो कहलाता है।

संवादन तथा क्रिया करता रहता है।

③ प्रतिरोध चक्र (Resistive loop) - सुषुम्ना के अरु प्रतिरोध या प्रतिरोध क्रियाओं के संवादन होता है। यह कार्य का मुख्य आरीर, आकार रचनाओं का पथ होता है जिसे प्रतिरोध चक्र (Resistive loop) कहते हैं। प्रतिरोध चक्र के निम्नलिखित अंगों का सहयोग रहता है।

(क) सबसे पहले उत्तेजना को ग्राइकेन्द्रों अरु करती है। इसके फलस्वरूप ग्राइकेन्द्रों से लगे स्नायु कोशों (neurons) के स्नायु-प्रवाह उत्पन्न होते हैं। ये स्नायु प्रवाह जगवाही स्नायु (Sensory nerve) द्वारा सुषुम्ना (Spinal cord) तक पहुँचते हैं, जहाँ साहचर्य स्नायु (Association nerve) इसे ग्रहण कर जाती है। स्नायु (Motor nerve) से संबंध स्थापित होता है। और तब जातेवाही स्नायु द्वारा जातीवाही स्नायु-प्रवाह (Motor nerve) उत्पन्न होता है। यह चक्रों (Circuits) में पहुँचकर उन्हें जगवाही बनाता है। फलतः चक्रों में गतिशील होकर संचय क्रिया (Reflex action) करती है।

संक्षेप में प्रतिरोध चक्र में —

(क) ग्राइकेन्द्र (Receptor)

(ख) जागवाही स्नायु (Sensory nerve)

(ग) सुषुम्ना (Spinal cord)

(घ) साहचर्य स्नायु (Association nerve)

(ङ) जातीवाही स्नायु (Motor nerve) एवं

(च) चक्र (Motor loop & circuit)

(ज) मांसपेशियाँ (Muscles) अथवा

पिंड (Organs)

मानव में एक और संग्राहक (Receptor) है जो हमें वातावरण से मिलने वाली जानकारी को ग्रहण करने में मदद करता है। दूसरी ओर हमें प्रभावक (Effector) भी मिलता है जो — मांसपेशियाँ, ग्रंथियाँ, हड्डियाँ, रक्त आदि जिसे वह वातावरण से इसी प्रकार (उत्तेजक) के प्रति कोर प्रतिक्रिया (Response) करने में समर्थ होता है। इन दोनों को ही अर्थात् आह्वयक (Receptor) और प्रभावक (Effector) के बीच सम्पर्क स्थापित करने की प्रणाली (Adjuster mechanism) हमारे शरीर में स्नायुतंत्र (Nervous system) स्थित है। इसी लिए स्नायुतंत्र को समायोजक यंत्रिका (Adjuster mechanism) भी कहते हैं। इसके तीन प्रमुख विभाग हैं —

- (i) परीधीय तंत्र (Peripheral Nervous system) — PMS
 - (ii) केन्द्रीय तंत्र (Central Nervous system) — CNS
 - (iii) स्वयंचालित तंत्र (Autonomic Nervous system) — ANS
- इस परीधीय स्नायुतंत्र - स्नायुओं का पथ (Neural path) होता है। जिसके द्वारा संग्राहक (Receptor) के सन्देश (Nerve impulse) स्नायु प्रवाह (Spinal cord) से होकर मस्तिष्क केन्द्रों तक जाती है। इस स्नायु पथ को ज्ञानवाहि स्नायु (Sensory neuron) कहते हैं। फिर मस्तिष्क के केन्द्रों से ज्ञानवाहि स्नायु प्रवाह ज्ञान स्नायु पथ से बाहर जाती है। प्रतिक्रियावाहि या गतिवाहि स्नायु (Motor neuron) कहते हैं। ज्ञानवाहि स्नायुतंत्र ज्ञानेन्द्रियों या संग्राहक से प्रारंभ केन्द्रिय स्नायुतंत्र (CNS) की ओर भी जाते हैं। गतिवाहि स्नायुतंत्र, केन्द्रिय स्नायुतंत्र (CNS) से प्रभावक (Effector) तक जाते हैं। संक्षेप में